Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 3, May-2018, ISSN 2230-7540

शिक्षा के श्रेत्र में मनोविज्ञान का महत्व एवं अभिप्रेरणा का चयन

Vijaya Yadav[1]* Dr. Siyaram Yadav[2]

[1] Research Scholar, Swami Vivekanand University, Sagar, MP

[2] Professor, Education Department, Swami Vivekanand University, Sagar, MP

सांराश – *किसी भी व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षा शब्द को लेकर आज भी एकमतता नहीं है, स्कूल में पठन-पाठन को शिक्षा का वास्तविक रूप माना जाता है, महात्मा गाँधी ने शिक्षा को सर्वांगीण विकास (शरीर, आत्मा तथा मस्तिष्क के विकास) की प्रक्रिया माना प्राचीन काल में भारतीय मनीषियों ने 'सा विद्या या विमुक्तये' कहकर शिक्षा का लक्ष्य निर्धारित किया था। इसका एक पक्ष तो व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करता है जिसमें बुद्धि, रूचि, आत्मविश्वास व प्रोत्साहित होना आते हैं। दूसरा पक्ष समाज के भावी विकास में योगदान देता है। शिक्षा के द्वारा ही विचार आध्यात्मिक मूल्य, महत्वाकांक्षाओ का विकास और संस्कृति के सरंक्षण का कार्य भी किया जाता है। व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता रहता है। वास्तव में यह माना जाता है कि उसका सम्पूर्ण जीवन शिक्षा काल है। मनुष्य को समाज में रहते हुए कई व्यक्तियों से अन्तक्रिया करनी पड़ती है। प्रत्येक समाज के कुछ नियम, परम्पराएँ, संस्कृति एवं मूल्य होते है। व्यक्ति को उस समाज में सामंजस्य स्थापित करने के योग्य बनाने के लिए उसका विकास उस समाज या समुदाय की संरचना के अनुसार किया जाता है। जिसके परिणाम स्वरूप उसमें सामाजिक कौशलों का विकास हो सके। सामाजिक सामंजस्य स्थापित करने में व्यक्ति की समस्या समाधान की योग्यता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में किसी न किसी प्रकार की समस्या का सामना अवश्य ही करना पड़ता है। इस हेतु शिक्षा का एक महत्वपूर्ण कार्य यह हो जाता है कि वह विद्यार्थियों में समस्या समाधान योग्यता को विकसित करे ताकि वे जीवन में आने वाली चुनौतियों व समस्याओं का साहस से सफलतापूर्वक सामना कर सके। इस शोध पत्र में हम शिक्षा के छेत्र में मनोविज्ञान का महत्व एवं अभिप्रेरणा का चयन करेंग।*

----------X----------

1. प्रस्तावना

शिक्षा को अंग्रेजी में एजूकेशन कहते है। एजूकेशन शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के एडूकेटम शब्द से हुई है जिसका अर्थ है शिक्षित करना। इ का अर्थ है अन्दर से तथा डूको का अर्थ आगे बढ़ना अर्थात अन्दर से विकास। शाब्दिक अर्थ के अनुसार शिक्षा एक विकास सम्बन्धी प्रक्रिया है। प्राचीन समय में शिक्षा शिक्षक व विषय केन्द्रित होती थी जिसमें बालक का स्थान गौड़ तथा विषय तथा शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण था। बालक को अनुशासन में रखने के लिए कड़े दण्ड की व्यवस्था थी। बालक की रूचि अरूचि तथा व्यक्तिक भिन्नताओं को कोई स्थान नहीं दिया गया था तथा प्राचीन काल की शिक्षा बालक के भावी जीवन के साथ कोई विशेष सम्बन्ध नहीं रखती थी।

आधुनिक काल में शिक्षा शब्द का अर्थ बदल गया है। अब शिक्षा विषय केन्द्रित न रहकर बालक केन्द्रित हो गई है। अब शिक्षक बालक को दंड से भयभीत न कर उसके साथ पे्रममय व्यवहार से शिक्षा देता है। यह बालक का पथ-प्रदर्शक है। आधुनिक शिक्षा में बालक की व्यक्तिगत भिन्नता पर ध्यान दिया जाता है। आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान पर आधारित है। इस सम्बन्ध में हमें स्मरण रखना चाहिए कि स्विट्जरलैंड निवासी अध्यापक पेस्तालाजी ने ही सर्वप्रथम इस बात पर बल दिया कि शिक्षक का प्रमुख कर्तव्य है कि वह शिष्य के मस्तिष्क का अध्ययन करे तथा शिक्षा की कला मानसिक प्रक्रियाओं के यथार्थ ज्ञान पर आधारित होनी चाहिए।

आधुनिक समय में वैज्ञानिक आविष्कार, खोज एवं ज्ञान का उद्भव तेजी से हो रहा है। इस परिस्थिती को ध्यान में रखते हुए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बदलाव की आवश्यकता महसूस हो रही है। कक्षा-कक्ष में परम्परागत विधियों का उपयोग शिक्षण कार्य के लिए किया जा रहा है। शिक्षा शास्त्र का मुख्य केन्द्र बिंदु

www.ignited.in

अधिगम होता है। प्रायः यह माना जाता है कि शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया पर ही शिक्षा के उद्देश्य निर्भर करते हैं। क्योंकि कक्षा-कक्ष में जिस स्तर का शिक्षण कार्य किया जाएगा। विद्यार्थी भी उसी प्रकार से शिक्षा उद्देश्यों को प्राप्त करेंगे। सामान्यतः कक्षाओं में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान पाठ्य पुस्तक मौखिक या व्याख्यान विधियों का प्रयोग शिक्षकों द्वारा किया जा रहा है। इस प्रकार कक्षा-कक्ष में अनुदेशन पूर्वतया व्याख्यान विधि से ही दिया जा रहा है जो कि विद्यार्थियों को सक्रिय रखने के बजाय निष्क्रिय श्रोता बना रही है। व्याख्यान की सहायता से केवल विद्यार्थियों को अधिक से अधिक सूचना देने का कार्य किया जा सकता है। इस पद्धति में शिक्षक सक्रिय होता है जबकि विद्यार्थी वर्ग निष्क्रिय होता है। इसमें विद्यार्थी कुछ करने के लिए अभिप्रेरित भी नहीं होता है। इस प्रकार परम्परागत विधियाँ विद्यार्थी के ज्ञानात्मक पक्ष के ज्ञान स्तर का ही विकास कर पाती है। आज शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की आवश्यकता समस्या समाधन योग्यता, रूचि, जिज्ञासा, वैज्ञानिक अभिवृत्ति, विश्लेषणात्मक योग्यता, समालोचनात्मक चिंतन और स्वअध्ययन की आदतों आदि का विकास करना है।

2. शिक्षा के छेत्र में मनोविज्ञान

शिक्षा के क्षेत्र में मनोविज्ञान के प्रयोग के फलस्वरूप शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन व अध्यापन करना शिक्षा शास्त्र के एक अपरिहार्य आवश्यकता बन गई है। वस्तुतः शिक्षा के उद्देश्यों को मूर्त रूप देने के कार्य में संलग्न व्यक्तियों के लिए शिक्षा मनोविज्ञान का सम्यक् ज्ञान अत्यंत आवश्यक तथा महत्वपूर्ण है। यही कारण है कि विश्वविद्यालयों के द्वारा शिक्षा शास्त्र के प्रायः सभी पाठ्यक्रमों में शिक्षा मनोविज्ञान को एक आवश्यक अंग के रूप में सम्मिलित किया जाता है। शिक्षा के उद्देश्य की पूर्ति के लिए शिक्षक को मनोविज्ञान का ज्ञान होना आवश्यक है। बालक की मनोवृत्ति में उपयुक्त परिवर्तन लाने में वह तभी सफल हो सकता है जब उसे मनोविज्ञान का ज्ञान हो। इस तरह से यह स्पष्ट है कि शिक्षा और मनोविज्ञान में घनिष्ठ सम्बन्ध है। इन दोनों के पारस्परिक सम्बन्धों को समझने से पूर्व हमें मनोविज्ञान का अर्थ समझ लेना चाहिए।

सृजनशीलता व प्रतिभासम्पन्न बालकों को समाज मे विशिष्ट स्थान प्राप्त होता है। इन्हे राष्ट्रीय धरोहर भी माना जाता है। राष्ट्रीय विकास तथा सांस्कृतिक उन्नति मे इनका विशेष योगदान होता है। इनसे ही राष्ट्र को नई पहचान मिलती है, और विश्व मे राष्ट्र का सम्मान भी बढता है। इसके लिए इनके विकास व इनकी शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। यद्यपि प्रतिभासम्पन्न बालकों के लिए विशेष नियोजित कार्यक्रम प्रस्तुत कर उनकी प्रतिभा की अभिवृद्वि के लिए प्रयास किये जा सकते हैं। तथापि इस मामले मे परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। बालक जन्म से लेकर तीन वर्ष तक की आयु ही परिवार में ही व्यतीत करता है। उसके पश्चात जब वह विद्यालय में प्रवेश लेता है। तो भी उसका अधिकांश समय लगभग 8-9 वर्ष तक परिवार मे ही व्यतीत करता है। ऐसे समय मे परिवार द्वारा उचित वातावरण प्रदान कर प्रतिभा को निखारा जा सकता है। परिवार के बाद शिक्षकों को भी ऐसा वातावरण तैयार करना होगा जो समाज के विकास मे व प्रतिभा को निखारने मे सहायक हो।

प्रतिभाओं के निखारने में शैक्षिक प्रौद्यौगिकी अति महत्वपूर्ण भूमिका में होती है। शैक्षिक प्रौद्यौगिकी शैक्षिक प्रक्रियाओं को याजे नाबद्व कर, कार्यान्वित करने में वैज्ञानिक साधनों का प्रयोग से है। शैक्षिक प्रौधोगिकी द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं मे सुधार लाने का लगातार प्रयास किया जाता है। शैक्षिक प्रौधोगिकी से तात्पर्य व्यवहारिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए वैज्ञानिक ज्ञान का दैनिक जीवन मे उपयोग करना। शिक्षा का सम्बन्ध उस तकनीक तथा व्यवहारिक ज्ञान से है, जो शिक्षण से अधिगम तक पहचुं रखता हो इससे मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, भाषा तथा विविध सम्बन्धित क्षेत्र शामिल है। शैक्षिक तकनीक में सिर्फ मशीन ही सम्मिलित नहीं हैं इसमे अधिगम क्षेत्र में आने वाली प्रणालियाँ तकनीक तथा अन्य सामग्रीयों का प्रयोग तथा मूल्यांकन भी शामिल किया जाता है।

3. अभिप्रेरणा

अभिप्रेरणा एक आंतरिक शक्ति होती है जो अनुक्रिया अथवा व्यवहार को तीव्र करती है। अभिप्रेरणा के अंतर्गत वे सभी आंतरिक अवस्थाऐं आती हैं जो किसी क्रिया को आरंभ करती है अथवा जारी रखती है। यदि अभिप्रेरणा की आंतरिक अवस्थायों क्रियाशील न हों तो बाह्य उद्दीपन होने पर अनुक्रिया उत्पन्न नहीं की जा सकती है।

अभिप्रेरणा एक मानसिक प्रक्रिया है जो आवश्यकता के कारण प्रारंभ होती है और आवश्यकता की संतुष्टि के साथ ही समाप्त हो जाती है। अभिप्रेरणा में किसी न किसी प्रकार से व्यक्ति के सांवेगिकता का स्पर्श अवश्य विद्यमान रहता है अर्थात् अभिप्रेरणा व्यक्ति के संवेग से किसी न किसी रूप से अवश्य ही संबंद्ध है।

अभिप्रेरणा व्यक्ति को काम करने के लिये बाध्य करती है तथा दिशा प्रदान करती है। प्रत्येक कार्य का एक निश्चित उद्देश्य होता है जिसे प्राप्त करने के लिये वह प्रयत्नशील रहता है। व्यक्ति को कार्य करने के लिये अभिप्रेरणा बैचेन कर देती है और फलस्वरूप अभिप्रेरणा के प्रत्यक्ष होते ही व्यक्ति के कार्य में सलंग्न हो जाता है अर्थात् कोई ऐसी क्रिया नहीं जिसमें किसी न किसी प्रकार की

www.ignited.in

प्रेरणा सम्बद्ध न हो। प्रेरणा विहीन क्रिया संभव नहीं है। अभिप्रेरणा में शारीरिक संरचना एवं संवेगशीलता विद्यमान रहती है, जो व्यक्ति को व्यवहार करने के लिये बाध्य करती है तथा वह व्यवहार किसी उद्देश्य तक पहुँचने के लिए बेचैन रहता है और वह अभिप्रेरणा तब तक विद्यमान रहती है जब तक व्यक्ति उद्देश्य की प्राप्ति नहीं कर लेता।

4. अभिप्रेरणा का महत्व

1. व्यवहार को नियंत्रित करना - अभिप्रेरणा के द्वारा शिक्षक बालकों के व्यवहार को नियंत्रित, निर्देशित तथा परिवर्तित कर सकता है तथा उनकी ऊर्जा को सही दिशा प्रदान कर सकता है।

2. चिका विकास - बालक रूपी नन्हा पौधा अनेक गुणों से परिपूर्ण होता है। उसमें बहुत सी अंर्तनिहित क्षमतायें होती है। अतः अध्यापक आंतरिक अभिप्रेरणा के द्वारा उसकी विविध रूचियों एवं विशेषताओं को विकसित कर सकता है।

3. यान केन्द्रित में सहायक - एकाग्रता बनाये रखने में प्रेरणा का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

4. मानसिक विकास में सहायक - शिक्षक प्रेरकों का प्रयोग करके छात्रों में ज्ञान प्राप्ति के लिये अभिलाषा उत्पन्न करके उनके मानसिक विकास में सहायता कर सकता है।

5. लक्ष्य प्राप्ति में सहायक - प्रत्येक व्यक्ति का कोई न कोई लक्ष्य अवश्य होता है। अभिप्रेरणा निर्धारित लक्ष्य की ओर अग्रसर होने के लिए सदैव प्रेरित करती रहती है।

5. अभिप्रेरणा की विशेषताएँ

1. तीव्रता में विभिन्नता:- अभिप्रेरणा तीव्रता की मात्रा में भिन्न-भिन्न प्रकार की होती है। शिक्षा की उपादेयता की दृष्टि से जो अभिप्रेरणा जितनी ही तीव्र होगी, अधिगम की मात्रा उतनी ही अधिक होगी, साथ ही अभिप्रेरणा की मात्रा जितनी कम होगी, अधिगम की मात्रा उतनी ही कम होगी। अतः अभिप्रेरणा की तीव्रता के साथ-साथ अधिगम की मात्रा बढ़ती और घटती रहती है।

2. अवधि में भिन्नता:- बहुत सी अभिप्रेरणा दीर्घकालिक होती है तथा बहुत सी अल्पकालिक। दीर्घकालिक अभिप्रेरणाएँ वे हैं जिनका उद्देश्य सुदुर होता है जिनकी प्राप्ति के लिये एक अपेक्षित अवधि की आवश्यकता पड़ती है। दूसरी ओर अल्पकालिक प्रेरणाएँ हैं जिनका उद्देश्य अत्यंत समीप एवं तत्काल होता है। शिक्षा की दृष्टि से जो अभिप्रेरणा जितनी ही दीर्घकालिक होगी वह उतनी ही ध्यान के लिये उपयुक्त होगी और जिन बातों पर ध्यान अधिक जाता है उसका अधिगम सहज हो जाता है।

3. अभिप्रेरणाओं का अंत भिन्न-भिन्न रूपों में हो सकता है:- यदि अभिप्रेरणा का अंत संतुष्टि में होता है तो यह अधिगम के लिये सहायक स्वरूप होती है।

6. उपलब्धि प्रेरणा

उपलब्धि प्रेरणा को व्यक्ति, समाज की परिस्थितियों, मूल्यों तथा मान्यताओं के माध्यम से अर्जित करता है। उपलब्धि प्रेरणा का स्वरूप व्यक्ति की आयु की वृद्धि के साथ-साथ परिवर्तित होता है। जैसे बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक शैक्षिक उपलब्धि संबंधी उपलब्धि प्रेरणा परिलक्षित होती है अर्थात् छात्र शिक्षा में अपनी अच्छी से अच्छी उपलब्धि हेतु आकांक्षा करते हुए प्रयत्न करता है। शिक्षा ग्रहण करने की अवधि समाप्त होने के बाद जब व्यक्ति अपने सामाजिक जीवन में प्रवेश करता है तो उपलब्धि प्रेरणा का भी स्वरूप बदल जाता है वह आर्थिक सामाजिक तथा प्रतिष्ठा संबंधी अभिप्रेरणाओं से अपने को बांधने लगता है। वह अर्थ, प्रतिष्ठा तथा समाज में स्थान प्राप्त करने स्पृहा संबंधी अभिप्रेरणाओं में अपने व्यवहार को लगाने लगता है।

उपलब्धि प्रेरणा एक ऐसी अभिप्रेरणा है जो व्यक्ति को जीवन के किसी क्षेत्र में श्रेष्ठता का स्तर उपलब्ध करने के लिये सक्रिय करती है। व्यक्ति की यह स्वाभविक प्रवृत्ति होती है कि अपने जीवन के आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक, चारित्रिक, प्रतिष्ठा संबंधी सभी क्षेत्रों में उच्चतम स्तर की उपलब्धि प्राप्त करें और जब भी इन उपलब्धियों के लिये सक्रिय होता है तब वह उपलब्धि प्रेरणा के कारण ही ऐसा करता है।

किसी भी प्रकार की उपलब्धि प्रेरणा के कारण किया गया व्यवहार निम्न बातों पर निर्भर करता है:-

1. जीवन के जिस क्षेत्र में व्यक्ति को उपलब्धि की आशा दिखायी देती है उस क्षेत्र में वह सफलता प्राप्ति हेतु क्रियाशील होता है।

2. वह अनवरत अपनी उपलब्धि के स्तर को श्रेष्ठ, श्रेष्ठत्तर तथा श्रेष्ठतम बनाने हेतु प्रयासरत रहता है।

www.ignited.in

3. वह कार्य में सफलता तथा विफलता के लिये स्वयं को उत्तरदायी मानते हुए अभीष्ट की उपलब्धि हेतु संघर्षरत रहता है तथा प्रबल आत्म अंतग्रस्तता के कारण सफलता भी अवश्य प्राप्त करता है।

4. व्यक्ति उपलब्धि प्रेरणा में अपनी दो प्रकार की संभावित परिस्थितियों के प्रति अत्यंत चैतन्य रहता है। पहली परिस्थिति, कार्य में सफलता प्राप्ति की आशा की स्थिति है तथा दूसरी परिस्थिति, असफलता के भय से स्वयं को बचाने की स्थिति है इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्ति अपनी किसी भी उपलब्धि प्रेरणा में जब कार्य को अधिक सरल मानता है तो सफलता की आशा की मात्रा बढ़ जाती है और यदि कार्य को बहुत कठिन मानता है तो उसमें असफलता की भय की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है। शिक्षक को अधिक सतर्क रहना चाहिये और अपने छात्रों में सफलता की आशा की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना चाहिये तथा उसे असफलता के भय की प्रवृत्ति से दूर रखना चाहिये।

जिन छात्रों में उपलब्धि प्रेरणा का स्तर ऊँचा होता है वे कठिन परिश्रम करते हुये किसी भी कार्य को उत्कृष्टता के साथ करना चाहते हैं। अतः शिक्षक के लिये यह अनिवार्य है कि वह छात्रों में उत्कृष्ट उपलब्धि के लिये चाह या आवश्यकता निर्मित करे। उपलब्धि की आवश्यकता के लिये अन्य वस्तुओं के अतिरिक्त सफलता की संभावना और सफलता की संतुष्टि मूल्य या मात्रा पर निर्भर करती है। अतः अधिगम की परिस्थितियों की संरचना इस प्रकार करनी चाहिये कि प्रत्येक छात्र को सफलता का एक अवसर के पीछे का राज यह हो कि वह समझता हो कि ऐसा नहीं करने से वह असफल हो जायेगा और तब उसे शिक्षक एवं माता-पिता से प्राप्त सामाजिक अनुमोदन भी समाप्त हो जायेगा।

7. निष्कर्ष

जब हम लक्ष्य या मूल्य को प्राप्त करने की इच्छा से नित्य प्रतिदिन अपने जीवन में जो कार्य करते हैं। यह कार्य करने की इच्छा व्यक्ति में कम या अधिक होती है। यही इच्छा व्यक्ति की कार्य करने की मात्रा या उपलब्धि स्तर होती है। यह उपलब्धि स्तर व्यक्ति के ऐसे तात्कालिक लक्ष्य की ओर इंगित करती है जो कि व्यक्ति की पहुँच तक हो। उपलब्धि अभिप्रेरण को व्यक्ति के अन्दर ऐसी आवश्यकता जो उस व्यक्ति में ही अंर्तनिहित उत्कृष्टता के स्तर को प्राप्त करने की प्रतिस्पर्धा के रूप में परिभाषित करते हैं। डिसिको और क्रोफोर्ड कहते हैं कि किसी कठिन एवं चुनौतीपूर्ण क्रियाकलाप या निष्पादन को संपन्न करने या उसमें प्रवीणता प्राप्त करने की संतुष्टि की प्रत्याशा को उपलब्धि अभिप्रेरण कहते हैं। शैक्षिक विधियों का उत्तरदायित्व छात्रों के वर्तमान प्रविष्ट व्यवहार को प्रस्तुत समस्या से समायोजित करने् मात्र से नहीं है बल्कि छात्रों में एक ऐसे नवीन प्रविष्ट व्यवहार को जन्म देना है जो बालक को शैक्षिक उद्देश्यों की उपलब्धि के लिये सक्षम एवं योग्य बना सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अग्रवाल, जे.सी. (2007). शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंध. आगराः विनोद पुस्तक मंदिरअत्र

वी.के. (2005). शैक्षिक तकनीकी के मूलाधार. नई दिल्लीः सुमित इन्टरप्राइजेस

कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (2006). शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार. आगराः विनोद पुस्तक

मन्दिरगुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, ए. (2010). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. इलाहाबादः शारदा पुस्तक

भवन पाण्डेय, के एवं श्रीवास्तव, एस. (2007). शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्लीः टाटा मेग्राहिल पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेडमित्तल,

एस. (1995). शैक्षिक तकनीकी. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा रूप रेखा, राष्ट्रीय. नई दिल्ली: शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2005.

बुच्छ एम..बी.., (1979), सैकिण्ड सर्वे आफॅ रिसर्च इन एजुकेशन, एनं.सी. आर..टी.., नई दिल्ली।

बुच्छ एम..बी.., (1986), थर्ड सर्वे आफॅ रिसर्च इन एजुकेशन, एनं.सी.आर..टी.., नई दिल्ली।

बुच्छ, एम..बी.., (1991), फोर्थ सर्वे आफॅ रिसर्च इन एजुकेशन, एनं.सी.आर..टी.., नई दिल्ली।

मंगल डॉ. एस.के. (2007), शिक्षण एवं अधिगम का मनोविज्ञान, टण्डन पब्लिकेशन्स, बुक मार्केट, लुधियाना, 141008। फोन-729622, 723574

सिहं अरुण कुमार, (2014), शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यटूर्स) आई.एस.बी.एन. नं. 13: 978-81-7709-986-7

www.ignited.in

Corresponding Author

Vijaya Yadav*

Research Scholar, Swami Vivekanand University, Sagar, MP